खिलते सूखे पत्ते

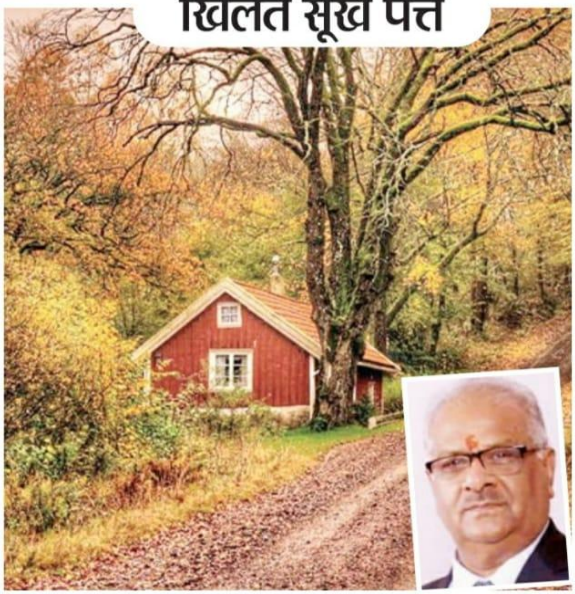

पतझड़ में पत्ते सूख सूख कर
मिट्टी में मिल जाते हैं,
वो ही पत्ते फिर बीज सँग मिलकर
वापस अंकुरित होते है,
होकर जलधारा से सिंचित बीज
पेड़ बन कर लहराते हैं,
जीवन रूपी चलती इस गाड़ी के
चक्के तेजी से चलते है,
हवा के झोंके तेजी से चलकर
अपना वेग दिखलाते है,
अग्नि, वायु और जल शक्ति से
सब मिट्टी में मिल जाते है,
वनस्पति और जीव जन्तु भी
नवजीवन लेकर आते हैं,
प्रकृति के इस खेल में हर प्राणी को
अनुशासन में रहना पड़ता है,
पृथ्वी के क्षणभंगुर इस जीवन को
साथ रहकर जीना पड़ता है,
सूर्य चंद्रमा गगन और जल वायु
पथ पर चलते रहते हैं,
धरा के रंगमंच परअभिनय करने
अभिनेता आते जाते है,
अपना अपना किरदार निभाकर
पोशाक उतारकर जाते हैं,
जीवन रूपी इस माया जाल में
सूखे पत्ते भी खिल जाते हैं,

-गोपाल कृष्ण व्यास
अध्यक्ष
मानवाधिकार आयोग, राजस्थान